पुण्य वाणी

वा० मू०
७-०

शरणागति

शुभ संकल्प,

ा,

प्रेम,

म कर्म,

ब्रह्मचर्य पालन,

ल फकीरचन्दजी महाराज

त्रा मन्दिर होशियारपुर (पंजाब

'मनुष्य बनो' के नियम

१—शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिकता के नियमों का वास्तविक
कोण से प्रचार करना और प्रेम, सभ्यता, आदर, शिष्टाचार, स
सहनशीलता और संयम की शिक्षा देना इसका मुख्य उद्देश्य है।
बनना और बनाना।

२—सन्त महात्माओं और ऋषियों की वाणी को सरल, सुबोध और
रण भाषा में प्रचार करना।

३—सामाजिक उन्नति कारक तथा देशहित कारक लेखों को भी
दिया जायगा।

४—किसी धर्म, पंथ या सम्प्रदाय के खण्डन सम्बन्धी लेख नहीं छापे जा

५—यह पत्र प्रत्येक मास की १५ तारीख को प्रकाशित हुआ करेगा।

६—लेखों के घटाने बढ़ाने और छापने न छापने का अधिकार सम्पाद
होगा। लेख सम्पादक के नाम भेजे जाँय।

७—ग्राहकों को पत्र लिखते समय ग्राहक नम्बर व पता साफ साफ
लिखना चाहिये। उत्तर के लिये जबावी कार्ड आना चाहिये वी०
पी० से पत्रिका नहीं भेजी जायगी। इसका वार्षिक मूल्य ७—००
डाकखाने से पूछताछ करके वहां से जो उत्तर मिले व अगला
निकलने से एक सप्ताह पूर्व तक कार्यालय में पहुंचने पर ही दूसरी
बिना मूल्य भेजी जा सकेगी।

८—यदि किसी मास का पत्र ठीक समय पर न पहुँचे तो पहले अपने

९—प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र, ग्राहक होने की सूचना, मनीआर्डर आदि मैनेजर
के नाम से भेजने चाहिये। मनीआर्डर कूपन पर अपना पता साफ साफ
लिखना चाहिये। और पते की तबदीली भी।

R. S.

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदं: पूर्णात्पूर्ण मदुच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते ॥

❋ मनुष्य बनो ❋

वर्ष ३२	फाल्गुन सं० २०३८ वि० फरवरी, १९८२	संख्या ४

साधु की महिमा

आप तरें औरों को तारें, यह साधु की महिमा ।
इनका पर उपकार है भारी, किससे कोई दे उपमा ॥
कोई बाहर कोई भीतर देखे, लीला अगम अनूपा ।
बाहर भीतर एक समाना, एक विचित्र स्वरूपा ॥
राधा सुरत शब्द कन्हाई, दोनों का भया मेला ।
बंशी बाजी जब मधुवन में, मेटा द्वन्द झमेला ॥
ब्रह्म सनातन रूप कृष्ण का, समझे कोई नर ज्ञानी ।
भँवर गुफा चढ़ सुने बाँसुरी, परखे शब्द निशानी ॥
राह रुकाना गुरु से पूछो, आगे अगम अगोचर ।
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, सत पद पहुँचो धुर घर ॥

सैर

मुन्शीलाल 'खुशदिल'

न शोहरत न इज्जत न जर चाहता हूं।
तेरी दीद आठों पहर चाहता हूं ··· ।
जो धो डाले सब दाग तन और मन के,
ऐ भगवन मैं वो चश्मता चाहता हूं।
तमन्ना नहीं ताज शाही हो सर पर,
जो दर पर झुके तेरे सर चाहता हूं।
तड़प उठे जो दिल दुखी की सदा पर,
वो दिल चाहता हूं जिगर चाहता हूं।
तेरा नाम हर वक्त लब पर हो मेरे,
यही धुन मैं शामो सहर चाहता हूं।
निगाहों से किस्मत पलट देने वाले,
मैं रहमत की तेरी नजर चाहता हूं।
खिचे आओ भगवन मैं जब आह खींचू।
यह नालों में अपने असर चाहता हूँ।
यहीं अर्ज 'खुशदिल' की है तुझसे मोहन,
जहाँ छोड़कर तेरा दर चाहता हूं।

—+—

जिन्दगी का साज भी क्या साज है, बज रहा है और वे आवाज है।
कोई नगमा है न कोई समा है, एक तेरी और एक मेरी आवाज है।
लय न टूटे जिन्दगी के साज की, जिन्दगी आवाज ही आवाज है।

—*—

गजल

हुजूर पीरेमुंगा साहेब

पहले तुम दिलदार थे, अब आहें दिलवर बन गये।
छीन कर दिल को गजब है क्यों सितमगर बन गये॥
बुतपने बुत बनके बैठे, मैंने जब शिज़दा किया।
पहले बुत की शक्ल थे अब सख्त पत्थर बन गये॥
सैंद गुलशन के लिये आया था अभी दुनिया में मैं।
तुमको देखा नरगिशे चश्म और समन्दर बन गये॥
बहरोवर थे तुम में देखा करता था मौजे हुबाब।
दिल बना मेरा सदफ तुम उनके जौहर बन गये॥
बनके अब पीरेमुंगा मस्ती की मय करदो जता।
तब कहूंगा साकी अहबाजे कोत्तर बन गये॥

—०—

मैं निशां रखता हूँ अपना, बे निशानी के लिये।
आरजी तन है लिवों से जा विहानी के लिये॥
नुक्ते में नुक्ते छिपे हैं बातों के पर्दों में बात।
दिल में दिल दिखला रहा हूं राजदानी के लिये।
हुस्न बाहिन वजना है इल्हाम है आवाजे गैब॥
कान रखता हूं सदा ये आसमानी के लिये।
जिन्नत व दोजख के (यह) झगड़े हैं।
गड़ लिये अलफाज सब यह अन्तरानी के लिये॥
रहम कर पीरेमुंगा दो घूंट दे सबको पिला।
आये हैं हक की शराबे अरगदानी के लिये॥

—०—

शब्द

मन की आँखें खोल बाबा ! मन की आँखें खोल ।
दुनिया क्या है एक तमाशा, चार दिनों की झूठी आशा ।
पल में तोला पल में माशा ज्ञान तराजू लेके हाथ में ।
तोल सके तो तोल ! बाबा ! मन की·········
चोर लुटेरे दुनिया वाले, तन के उजले मन के काले ।
इनसे अपना आप बचाले, रीत कहाँ की प्रीति कहाँ की ।
कैसा प्रेम किलोल ? बाबा ! मन की··· —
नींद में माल गवां बैठेगा, मन की जोत बुझा बैठेगा ।
अपना आप लुटा बैठेगा, दो दिन की दुनिया में प्यारे ।
पल– पलटे अनमोल ! बाबा ! मन की··· ····
मतलब की सब दुनियादारी, मतलब के सारे संसारी ।
तेरा जग में को हितकारी ? तन मन का सब जोर लगाकर
नाम हरी का बोल । बाबा ! मन की आँखें खोल ।

—o—

मसजिदों में है खुदा, तो मन्दिरों में राम है,
जपते हैं हिन्दू मुस्लमा उसका वह ही राम है ।
तसबी और माला में सिर्फ एक नाम का ही पास ।
सच अगर पूछो तो इन दोनों का एक ही काम है ।
शंख काशी में बजाया और अजां काबे में दी ।
खुद पुजारी खुद जला ले आशिके इस्लाम हैं ।
गउयें गोकुल में चराई बकरिया काबे में खूब ।
आप ही अहमद बना और आप ही घनश्याम है ।
खुल गया सब भेद नैय्यर समझा जब मकताई को ।
सारे मजहब हैं खिलौने, खुद खिलाड़ी राम है ।

—o—

प्रवचन

परम दयाल परम सन्त पंडित फकीरचन्द जी महाराज

मानवता मन्दिर होशियारपुर

२-६-१९७९

मन रे मान बचन इक मेरा ।

मैं तेरी दासी जन्म जन्म की, तू हुआ स्वामी मेरा ।
तीन लोक का नाथ कहावे, तीन देव तेरा चेरा ॥
ऋषि मुनि सब पर हुकम चलावे, जती सती सब चेरा ।
तेरे बस सुर नर और जोगी, कोई तेरा हुकम न फेरा ॥
जिस चाहे तिस जगत फँसाए, और चाहे तिस करे निबेरा ।
ऐसी महिमा सुनी तुम्हारी, ताते तुम पै करूँ निहोरा ॥
इस तन नगरी तुझ देश में, क्यों कैदी हुए पड़े अन्धेरा ।
सतगुरु मोसे कहा वचन इक, मन को सँगले चलो सबेरा ॥
ताते तुम पैं करूँ बीनती, चढ़ो गगन क्यों करो अवेरा ।
इन्द्री द्वार विषय अब त्यागो' करो अभी सुलझेरा ॥
तुम सा संगी औरन कोई, मैं तुम्हारी और तुम ही मेरा ।
मुझ दासी का कहना मानो, गगन मण्डल चढ़ बांधो डेरा ॥
जैसे थे वैसे फिर हुइ हों क्यों दुख सुख यहां सहो घनेरा ।
सतगुरु पूरे भेद बताया, मनको मन को सँग लेकर घर फेरा
मैं हूँ सुरत पड़ी बस तेरे, बिन तुम मदद शब्द नहीं हेरा ।
जो ये कहन न मानो मेरी, तो चौरासी करें बसेरा ॥
अब तुम दया करो मेरे ऊपर, सुन बिनती खोजो धुन नेरा ।
हम तुम दोनों चढ़ें अधर में, जाकर बसें पहाड़ सुमेरा ।
तुम यहां रहना राज कमाना, हम पहुंचें जहाँ राधास्वामी डेरा

काफी समय हुआ मैंने ये शब्द पढ़ा था, ये सार वचन का शब्द है। और मेरे ख्याल में हुजूर महाराज का है। वो अपने मन से दुखी होकर ऐसा कहते हैं कबीर साहब कहते हैं कि मन चौदह लोक में रहता है। चौदह लोक कौन से हैं। छः लोक शरीर के, छः लोक मन के और दो सत और अलख अगम के। इस मन से कौन नि.- लना चाहता है। क्या आप दुनियादार कोई निकलना चाहता है। आपको इच्छा है मन से निकलने की ? और जो मेरे जैसे कहते भी हैं, वो गलती पर हैं क्योंकि मन को हमेशा के लिए छोड़ना मेरे लिए भी मुश्किल हो रहा है। तुमको तो क्या कहूँ दुनिया की रतें तंग करती हैं।

रात का अपना किस्सा सुनाता हूँ, कि मेरे साथ क्या गुजरी रात को मैं लेट गया। पहले तो शब्द में चला गया। फिर ११ नींद खुल गई। क्योंकि दिन को मैं मन्दिर में सो जाता हूँ रा ११ बजे से सुबह तक जागता रहा। सोया नहीं समय में रहता इस समय का रात का ये तजुर्वा है। क्योंकि मन मेरे साथ था। वह तरह तरह के ख्याल उठाता था। अन्दर जाता तो कई प्रकार के चित्र आते थे. अन्तर जाने नहीं देते थे। हालाँकि मैं जानता भी था। ज्ञान भी था कि ये कुछ नहीं। हैं नहीं फरजी हैं, कल्पित हैं संस्कार हैं। ख्याल है और माया है। मगर उनको छोड़ नहीं सकता था फिर भी वो आती थी, हालांकि शकलें मुझे दुखदाई नहीं थी। मगर वो सनेमे जैसा तमाशा था, और मेरे लिए निकलना मुशकिल था, कोई महात्मा अपनी कमजोरियाँ तुमको नहीं बताता. हम सब बगले भगत हैं, बाहर बैठ के डाढ़ी बढ़ा कर कहते हैं कि हम बड़े महात्मा हैं। सब के साथ ऐसी गुजरती है। कोई अपनी रहनी किसी को बताता नहीं, जब तक मैंने इन शकलों को छोड़ कर शब्द को नहीं पकड़ा तब तक मेरा मन शकलें बनाता रहा, बड़ी मुश्किल के बाद मैंने अपने आपको काबू किया उस समय मुझे ख्याल आया कि

क्या करें कोई तरीका है बचने का और इस शब्द की याद आई।

मन रे मान वचन इक मेरा
मैं तेरी दासी जनम की तू हुआ स्वामी मेरा।

मैं बीसवीं सदी का आदमी हूँ। अपनी आत्मा से पूछता हूँ कि वह कौन कहता है ? वो चीज हमारे अन्तर कौन है। जो मन को यह कहती है कि मैं तेरी जन्म जन्म की दासी हूँ ? उस चीज का मुझे कैसे पता लगा ? जब कभी मैं रूप रंग रेखा को छोड़ जाता हूँ। यानी इस मन से छुटकारा पा जाता हूँ तो आगे प्रकाश और शब्द में चला जाता हूँ। जो चीज प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है। वो सुरत है। जो मन से यह कहती है क्योंकि वो सुरत जब से दो बनी, इस मन के चक्कर में आई और मन उसका स्वामी बन गया। क्योंकि उसके शरीर के अन्दर आने से फुरना फुरती है रव्वाहिश या बासना पैदा होती है। और जो ख्वाहिश या बासना है वो मन का चक्कर है। जिसने भी इस शब्द को लिखा उसने किस ख्याल से इस शब्द को लिखा उसका अपना अनुभव होगा मुझे नहीं मालूम, मैं किस ख्याल से इसको ठीक मानता हूँ। वह आपको बताता हूँ। वह जन्म जन्म से यहाँ फँसी हुई है। वह आई कहाँ से ? ऊपर से जिसको परम पद बोलते हैं। वहाँ से सारे लोकों में से होती हुई यहां आई। ये फकीरचन्द तो मेरे शरीर का नाम है। अकल व विचार मेरे ख्यालात है। जो असली चीज मेरे अन्तर या तुम्हारे अन्तर में है वो है जिसको मैंने तुमको बताया।

तीन लोक का नाथ कहावे, तीन देव तेरा चेरा।

असल में जिन्दगी या हस्ती की चेतनता जो हमारे अन्दर है। उसका नाम ही मन है। वह चेतनतायें तीन प्रकार की हैं। कहीं कारण हैं, कहीं सूक्ष्म है और कहीं स्थूल है, कहीं वह जिसमें है। उसको मन कह देते हैं, कहीं वो ख्यालात के रूप में हैं उसको मन कह देते हैं। कहीं वो रूह यानी प्रकाश में है उसको आत्मा कह देते

हैं। इसलिये मन के कई रूप हैं कारण, सूक्ष्म, स्थूल, कोई मन को दसवें द्वार तक समझता है। कोई मन को त्रिकुटी तक समझता है और कोई मन को ऊँचा समझता है।

सन्तों ने चौदह लोक में मन बताया है। केवल शब्दों का अन्तर है। तीन लोक शरीर, मन और आत्मा या जागृत, स्वप्न व सुशुप्ति वो तीनों का पैदा करने वाला है और वो सब उस मन के चक्कर में ही हैं। बासना जो पैदा होती है और इससे जो फुरना फुरती है ठहरती और समय पर समाप्त हो जाती है। ये ब्रह्मा, विष्नु, महेश तीन देव सब हमारा मन ही है।

ऋषि मुनि सब पर हुकम चलावे, जती सती सब घेरा।

एक आदमी जप, तप और ध्यान करता है उसका मन ही तो कहता है कि जती बनजा तो अच्छा हो जावेगा या ध्यान करेगा तो तुझे कुछ मिल जावेगा। योगी किसी वस्तु के साथ अपने आपको लगाकर जोड़ता है। तो जिसके साथ उसने अपने मन को लगाया है वो तो उसका अपना ही मन है। जिस तरह तुम लोग मेरा ध्यान करते हो या किसी अपने गुरु का ध्यान करते हो। तुम समझते हो वह गुरु कोई और है। ब्यास वाला है या होशियारपुर वाला है। दर असल वो जो गुरु है जिसका रूप तुम्हारे अन्दर प्रगट हुआ वह तुम्हारा अपना ही मन है। इस वास्ते ऋषि, मुनि किसको पूजते रहे कोई राम को पूजता है कोई कृष्ण या देवी को पूजता है जिसको वह पूजता है वह है कौन ? ऐ इन्सान वह तेरा अपना ही मन है। तेरा अपना ही विश्वास है। यही एक राज था संत मत का जिसको पर्दे में रख करके हम भोले भाले जीवों को अज्ञान में रख कर हम को लूटा गया है और इन गुरुओं महात्माओं, मजहब वालों और पंथ वालों ने हमको बेवकूफ बनाया है। इनको खुद पता नहीं है कि असलियत क्या है। तो स्वामी जी साफ लिख रहे हैं—

ऋषि मुनि सब पर हुकम चलावे, जती सती सब घेरा

क्योंकि जो यह काम करते हैं वे अपनी मरजी से करते हैं न उनका अपना मन ही जो है वही उनको किसी को कहता है. जप कर, किसी को कहता है तप कर, किसी को कहता है तप कर, किसी को कहता है बायां बाजू खड़ा करके खड़ा रह इत्यादि।

तेरे बस सुर, नर और जोगी, कोई तेरा हुकम न फेरा

किसे फेरेंगे ? जो कुछ मन कहता है, हम सब करते हैं अच्छाई भी मन कराता है और बुराई भी मन कराता है। वो कहते हैं योगी जती, सँन्यासी कोई तेरा हुकम फेर नहीं सकता।

जिसको चाहे जगत फँसावे और चाहे जित करे निवेरा।

वो मन के अखत्यार में है। अगर मन के चक्कर में रह गया। तो आदमी जगत में फँसा रहा। अगर मन के चक्कर से ऊपर चला गया तो बच गया। तो इस मन को बताने और समझाने के लिए यह सत्संग है ताकि जीव को मन क्या है, आत्मा क्या है और अपने रूप का ज्ञान हो जावे।

ऐसी महिमा सुनी तुम्हारी, ताते तुमते करूँ निहोरा

वो कहती है। तेरी महिमा इतनी बड़ी है कि तू सबको काबू में रखता है। इस वास्ते मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ। ये एक ख्याल को जाहर करने का एक तरीका या ब्यान करने का ढंग है कि सुरत मन के पास जाकर ऐसे प्रार्थना करती है।

इस तन नगरी तुछ देस में, क्यों कैदी हुए पड़े अँधेरा

तुम देखो, क्या हम सब इस शरीर के अन्दर कैदी नहीं हैं। मैं अपने आपको पूछता हूँ कभी खारिश है, कभी पेट दर्द है, कभी कब्ज है, कभी दांत दुखता है तो दुख सुख इस शरीर में हैं याकि नहीं ? तो हम इस मन या इच्छाओं की वजह से इस दुनियां के चक्कर में हैं।

सत्य गुरू मो से कहा बचन एक, मन को संग ले चलो सवेरा

गुरु ने मुझ से ये बात कही कि मन को साथ ले के ऊपर चल

जो मन को साथ ले जाता है वो कहां तक जाता है। निर्विकल्प समाधि तक जा करके मन संकल्प नहीं करता निर्विकल्प समाधि का दूसरा नाम है महासुन्न, तीसरा नाम मैं अपनी तरफ से बेख्याली बताता हूँ। जिसके दिल में कोई ख्याल नहीं आता, कोई विचार नहीं उठता कोई शकल नहीं बनती, कोई कुछ नहीं होता, वह जो अवस्था है उसका नाम है दसवां द्वार। दुनियां मर गई दसवाँ द्वार ढूढ़ते, ढूढ़ते कानों में उँगलियाँ डाल डाल के मैं भी मर गया।

ताते मैं तुम ते करूँ बीनती, चढ़ो गगन क्यों करों अबेरा।

वो कहते हैं। तू गगन को चढ़ चल क्योंकि यहां तो शरीर में रहते हुए, कोई न कोई दुख ही है तो ये दुनियाँ है क्यों? हम लोग जितने हैं इस दुनियाँ के पीछे फिरते हैं पुत्र नहीं है, धन नहीं है। अरे ये तो जो कुछ है, ये दुनियां का काम है। जो इसमें फँसा वह फिर जन्म मरण से बच नहीं सकता। इस वास्ते सन्तों का मार्ग जो है, वह केवल जन्म मरन से रहित होने के लिए है और प्रवृति मार्ग जो है वह मन को अच्छा खयाल अच्छा विचार और अच्छी आस देने के लिये है। ताकि तुम्हारा लोक और परलोक दोनों सुधर जावें सन्त मत की ऊँची शिक्षा केवल निवृति मार्ग की है, क्योंकि जब तक कोई इन्सान नहीं बनता, वह रूहानियत का हकदार नहीं है। इसलिए मैंने बड़े तजुर्बे के साथ 'इन्सान बनो' की आवाज उठाई है। जब तक कोई आदमी पहले इन्सान नहीं बनता, वह आगे रूहानियत को नहीं जा सकता। जिसको मरजी चाहे गुरु करलो, इन्सान बनना क्या है? कि अपने मन को ऐसे खयाल देना जो तुम्हारे लिए या दूसरों के लिए कल्याणकारी हो, बस इतनी ही बात है।

इन्दरीदार बिषय रस त्योगो, करो अभी सुलझेड़ा।

अब तुम देखो बुरा न मानना कौन है जो इन्द्रीदार विषयों को त्यागता है? जवानी में तो खरे हुआ बच्चे होगये तीन तीन चार-चार बच्चे तुम्हारे हैं। मगर अब भी नहीं छोड़ते और फिर ये

उम्मीद रखते हो कि किसी गुरु के पास जाओ, तो वो तुम्हें सतलोक ले जावेगा, किलकुल बकवास है। और झूठ है। इन गुरुओं ने हमको इतना बेवकूफ बना के लूटा है। जिसका कोई हद व हिसाब नहीं। इसमें तो शर्त यही है कि इन्दरियों के विषय विकार को छोड़ो। इस वास्ते में लोगों को नाम नहीं देता क्योंकि नाम देना बे फाईदा है। उससे किसी को लाभ नहीं। मेरे पास जैसा आदमी आता है। उसके जैसे हालात होते है। उसके अनुसार उसको कह देता हूँ। दुनियादार आता है तो दुनिया की बात बता देता हूँ। परमार्थ वाला आता है तो परमार्थ की बता देता हूँ ये जो किसी वर्णात्मिक नाम का जाप किया जाता है। जैसे कोई पांच नाम कोई राधास्वामी कोई अल्लाह या कोई वाहे गुरु या राम राम मन से जपता है। वो तो काल मत है। यानी मन के चक्कर में है। वह तो मन को साधने या इकट्ठा करने का एक ढंग है। तुम कोई भी वर्ण वर्णात्मिक नाम से जो तुम्हारे गुरु ने बताया उससे साध लो। वह तो केवल मन इकट्ठा करने को है। असली चीज तो निरविकलप समाधि के बाद आती है, यानी दसवें दुवार से आगे आती है। यही बाबा सावनसिंह जी सारी आयु कहते रहे। दस दुवारे लंघो आगे सतगुरु खलोता ए, दुनिया ने इसका अर्थ उलटा समझा कि आगे बाबा सावनसिंह जी का सुन्दर चेहरा होगा, दाढ़ी होगी, पगड़ी होगी।

जब तक डाढ़ी और पगड़ी या फकीर चन्द का रूप तुम्हारे अन्दर आता है तब तक तुम मन के चक्कर से बाहर हुए कैसे ? जब तक तुम किसी गुरु को या राम को या कृष्ण को इन्सानी रूप में अपने अन्तर में देख रहे हो वो तो तुम्हारा मन ही है। फिर तुम कहोगे ये नहीं करना चाहिये ? नहीं ये लाजमी है। सुमिरण और ध्यान करने से मन तुम्हारे काबू में आवेगा। यह न समझना में सुमरण ध्यान को गलत कहता हूँ। सुमिरण ध्यान जड़ है। जिस

प्रकार बच्चे स्कूल में जाते है। उनको पहाड़े पढ़ाते हैं, अगर वो पहाड़े याद न करे। तो आगे परीक्षा कैसे देंगे। ये जो वर्ण आतमक नाम का सुमरण ध्यान है। ये रुहानियत में जाने से पहले पहाड़े है। इनका होंना जरूरी है। मैं जानता हूँ मैं ऊँचा बोल रहा हूँ। ये ठीक है। प्रत्येक आदमी अकली तौर पर तो मेरी बात को समझ जावेगा मगर अमल करना कभी-कभी मेरे लिए भी मुशकिल हो जाता है। तो तुमको क्या कहूँ। मैं जानता हूँ ये मन माया सब कलपित हैं। मगर कई बार ऐसे Seene आ जाते हैं हालांफि मैं जानता हूँ कि यह कुछ भी नहीं हैं मगर फिर भी Seene फिरते रहते हैं। रात को यही मेरी हालत थी, तब मुझे ख्याल आया कि इस शब्द पर अपना अनुभव ब्यान करूँ जब तक शरीर और मन है। ये मन जिस प्रकार की प्रकृति तुम्हारी बनी हुई है। वैसे विचार उठावेगा।

प्रकृति कैसे बनती हैं ? सबसे पहले प्रकृति वनती है मां बाप से जब मां और बाप अपने स्वाद के लिए आपस में मिलते हें। तो बच्चा आ जाता है। उसकी प्रकृति नेक कैसे होगी ? उसकी प्रकृति विषय की होगी या जिस प्रकार के ख्यालात जब बच्चा पेट में है। या दूध पीता है। मां ने अपने दिमाग में रखे हुए है या रखती है। उनका असर उस बच्चे पर जावेगा, कोई रोक नहीं सकता; ये सारी वातें मन समृति में लिखी है। मैंने उनको खोल दिया, क्योंकि मैं समझता हूँ कि इन्सान को असली पहलू में लाना मुशकिल है। जिस आदमी की बुनयाद ही ऐसी है। जैसे जिस मकान की नींव रखते हो अगर वो ही कच्ची है। तो मकान नहीं चलेगा। तो पहली नींव या नीम क्या है ? हमारी प्रकृति का बनना मां बाप के आधीन है जैसे उनके ख्यालात होंगे, जिस भाव से वो आपस में मिलेंगे, वो संस्कार बच्चा लेगा, कोई रोक नहीं सकता। रुहानयत की बात तो

बड़ी ऊँची है। पहली बात ये है। जो मैं आमतौर पर कहता रहता हूँ कि हम लोग सन्तान को सन्तान के ख्याल से पैदा नहीं करते। हम तो अपने सुवाद और आनन्द के लिये जाते है। कोई शराब पी के जाता है। कोई भंग पी के जाता है। किसी के मन में कुछ होता है। औरत के मन में कुछ होता है। तो फिर ये उम्मीद करो कि तुम्हारे जो बच्चे पैदा होंगे वो दुनियां में तुम्हारे या देश के हितैशी होंगे। ये बिल्कुल झूठी बात है। और गलत बात है। मैंने अपने घर में और बाहर भी अजमाता हूँ। मैं जो कुछ कहता हूँ पुस्तक की लिखी नहीं कहता।

इन्द्री द्वार विषय अब त्यागो करो अभी सुलझेड़ा।

अगर कोई आदमी इस चक्कर से निकलना चाहता है। तो उनको अपने विषय विकार का जीवन छोड़ना पड़ेगा। अगर ये नहीं छूटता तो तुम लाख किसी के चेले बन जाओ, तुम्हें कोई लाभ नहीं सहायता करने वाला तुम्हारा अपना मन है।

तुमसा सँगी और न कोई मैं तुमरी और तुम हो मेरा।

इसमें कोई झूठ है ? सबसे पहले हमारा सम्बन्ध मन के साथ है ना, अगर मन नहीं है। तो मैं बोल नहीं सकता और तुम सुन नहीं सकते।

मुझ दासी का कहना मानो गगन मण्डल चल बांधो डेरा।

वो कहती है गगन मण्डल चल, क्यों ? क्योंकि इस शरीर में रहते हुए कोई संत कोई परम संत अवतार पीर, औलिया ये दावा नहीं कर सकता कि उसका मन बिलकुल ही हमेशा के लिए साफ रहेगा जीवन है ही यही इस में दुख सुख पाप और पुन धर्म और कर्म नेकी और बदी, ऊँचाई और नीचाई। ये जब तक हमारा

शरीर है और मन है यह होता रहेगा कोई रोक नहीं सकता। मैंने रात का अपना बरना बताया कि नहीं बताया।

जैसे थे वैसे फिर हुई हो, क्यों दुख सुख यहां सहो घनेरा।

वो कहते हैं, उपर चल इस दुनियां में रहके दुख सुख के सिबाय तुझे मिलेगा क्या ?

सत गुरु ने पूरे भेद बताया, मन को संग लेकर घर फेरा।

गुरु ने कहा मन को महासुन्न तक साफ रख के निरविकल्प समाधि में जाओ, फिर मन को छोड़ जाओ फिर आगे जाओ।

मैं हूँ सुरत पड़ी बस तेरे, बिन तुम मदद शब्द नहीं हेरा।

रात को मेरी हालत ऐसी थी, तब मैंने इस शब्द को निकला। वरना में कभी ऐसा शब्द न लेता, तजरबे ने क्या साबित किया ? कि जब तक इन्सान की सुरत शरीर में और मन में है, वह ज्ञान भी रखता हो कि शरीर मेरा नहीं है। ये शक्लें मेरी नहीं हैं। उसको लाभ होगा। फिर शरीर में बीमारी आवेगी, और वो शक्लें आवेंगी क्योंकि यह देश ही ऐसा है। इसका कानून ही यही है। हो सकता है। जो कुछ मैं कहता हूँ ये सारा गलत हो। ये कह देना कि में जो कुछ कहता हूँ सब ही final है। मैं इसके हक में नहीं हूँ। ये मेरा अपना रात का तर्जुबा है। शकलें सामने आती थीं। जब न हटा सका तो मैंने ध्यान आदि सब छोड़ दिया और फिर शब्द में ऊपर गया शब्द में, इस वास्ते कहते हैं ध्यानी भी भूल जाते हैं और गिर जाते है।

जो ये कहन न मानो मेरी, तो चौरासी करें बसेरा।

सुरत कहती है कि अगर तू ऊपर चढ़ के मन से परे नहीं जाता तो भई तेरी चौरासी नहीं कटेगी।

अब तुम दया करो मेरे ऊपर, सुन बिनती खो जो धुन नेरा।
हम तुम दोनों चढ़ें अधर में, जाकर बसें पहाड़ सुमेरा,
तुम वहाँ रहना राज कमाना, हम पहुँचे जहां राधास्वामी।

अब इसका जवाव मन देता है।

मन वोला सुरत से फिर ऐसे।
विषय स्वाद मो से जात नहीं छोड़ा॥

अब देखो, तुम मतलब को समझो कि जो आदमी विषय और स्वाद में रहता है। वो कभी वहाँ पहुँच सकता है। वो यहाँ जा नहीं सकता।

कैसे करूँ बचन किस मानूँ, मैं इन्द्री बस हुआ न थोड़ा।
बल पौरस में सब ही हारा, अब इनसे मेरा चले ना जोरा॥
में चाहूँ छोड़ूँ भोगन को, देख भोग बस चले न मोरा।
आगे पीछे बहुत पछताऊँ, समय पड़े पर होवत चोरा॥

मौका आ जाता है। सत तो बस ज्ञान ध्यान सब धुरल हो जाता है।

कैसे चढ़ूँ गगन को प्यारी, मन चंघल जैसे दौड़त घोड़ा।
ता ते तो से कहूँ जतन में, चल सतगुरु पे करो निहोरा॥

एक जतन बताता हूँ कि किसी गुरु के पास चलो वहाँ अपनी तकलीफों को ब्यान करो।

शरण पड़े अब मिलकर हम तुम, कर सतसंग होय कुछ बड़ा।

मन कहता है कि हम तुम चलते हैं गुरु के पास जाकर के सत-संग करते हैं फिर हम में ताकत आ जावेगी।

दया करें सत्य गुरु जब अपनी, पल पल रखे मो को मोड़ा।
मैं अपने बल चढ़ूँ न कब ही, जव लग मिले नहीं गुरु बन्दी छोड़ा।

गुरु वो है। जो निरवन्ध है। मुझको एक ऐसे गुरु मिले थे जब मैं उनसे प्रेम करता था तो वो लिखा करते थे किताबो में—

फकीरा गुरु तो तेरे पास—
तेरे तन में तेरे मन में तेरे स्वाँसों स्वाँस,
गुरु नहीं कांशी गुरु नहीं, मथुरा गुरु नहीं विच कैलाश।
ढूँढ़ इसे अपने हृदय में, वहाँ है गुरु का बास
कर अज्ञान बास !

मगर मैं उनके शब्दों की रूह को नहीं समझता था समझाने को वो समझा गये। मगर हमारी खोपड़ी में समझ नहीं आती थी। क्यों नहीं आती थी ? क्योंकि बचपन की शादी में मेरा ब्रह्मचर्य गिरा हुआ था, बस ये एक कुँजी मैंने समझी हुई है कि इन्सान अपने शारीरिक और मानसिक ब्रह्मचर्य को बनाये रखे, इसके अर्थ ये नहीं कि औरतों को जवाब दे दो। औरतें सन्तान पैदा करने के लिए होती है। विषथ भोग और सुवाद के लिए नहीं होतीं। हम बस लोग जितने है। चाहे मर्द चाहे औरतें, हम विषय भोग के सुवादी होते हैं। औरतों का हमारे साथ मेल अच्छी सन्तान पैदा करने के लिए है। और घर में शान्ति सुख और आनन्द रखने के लिए है। मगर वो तो अब जमाना बदल गया, खुदरो औलाद पैदा हो रही है मियाँ वीबी अपनी ऐश और मजे के लिये मिलते हैं। तो औलाद आ जाती है। अपने आप बिना बुलाये बच्चे अन कालड़ चिलडरन आ जाते हैं। उनसे ये अमीद करो कि ये देश में शांति लावेगे नहीं ला सकते।

सुनकर सुरत अधिक हर खानी, चल जल्दी वो बन्धन तोड़ा।

कहते हैं गुरु के पास जाओ, वहाँ से सतसंग लो या सुनो। वहां से तुम्हें सोधी मिल जावेगी तुम्हारे वन्धन कट जावेंगे।

सतसंग गही अब दोनों, भर भर पीवत अमी कटोरा।
दोनों मिलकर चढ़े गगन की, शब्द शब्द रस हुए चटोरा।
दयाकारी राधास्वामी ने उन पर, हीरा मोती लाल बटोरा।

हीरे मोती लाल क्या हैं ? कोई होरे हैं ? हीरे मोती लाल अनुभव है ज्ञान है। सच्ची समझ हैं। सच्ची समझ का नाम हीरे मोती लाल है। वो इकट्ठे किये, यानी सच्ची समझ सच्चा ज्ञान, सच्चा भेद, हमने सतगुरु की संगत से लिया और क्योंकि हमको इच्छा थी ऊपर चढ़ने की हम दोनों ऊपर चढ़ गये।

राधास्वामी ऐसी मौज दिखाई, मार लिया अब काल कटोरा।

कबीर साहब का एक और शब्द है। इसका ख्याल भी मुझे आया था, ये भी उसके साथ मिलते।

मन मस्त हुआ तब क्यों बोले।
हीरा पायो गांठ गठईयो, बार बार वा क्यों खोले।

वो कहते हैं जब मन मस्त हो जाता है। ज्ञान मिल गया समझ मिल गई तो उसको बार-बार क्यों खोलूँ।

मन मस्त कब होता है ? मस्ती की हालत में क्या होता है आप शराब पी लेते हैं। कुछ सुध बुध नहीं रहती, तो वो सुध बुध का रहना है ? जब तुम्हारा मन इकट्ठा होकर के महासुन में या सुन्न में चला जाता है तो फिर वहां संकल्प आदि नहीं रहते उसको बोलते हैं मस्ती। दाता दयाल का शब्द है।

मस्ती की मस्ती मस्ती हो, मस्ती में मस्ती है।
मस्ती की है शराब जो, महंगी न ससती हो॥

ये वह अवस्था है कबीर साहब कहते हैं जब वह अवस्था आ जाती है। फिर वो बोलेगा क्या, कह नहीं सका।

हलके थी जब चढ़ी तराजू, पूरी भई तब क्यों तौले।
जब वजन (भार) ही पूरा हो गया, तो फिर क्यों तोले,
सुरत कलारी भई मतवारी, मधवा पी गई बिन तोले

सुरत जो है जब उसको ज्ञान हो जाता है। वह अपने आप में अरथात Self में जब चेली जाती है तो उतना शराब पी लिया उसने जिसका कोई हिसाब नहीं है। यानी फिर वह अपने आप में गठन हो जाता है। न कोई इच्छा है, न ज्ञान है। न अज्ञान है। न धर्म है। न कर्म है। अपने आप में आप एक अवस्था आ जाती है। संत इसको सच बात बोलते हैं। और शांति कहते हैं। यत्र यत्र मनो मछती यत्र यत्र समाधि नाम जहां जहां उसका मन जाता है। वहां वह समाधि का आनन्द लेता है। यह आखिरी मंजिल है।

हंसा पाए मान मरोवर ताल तलैया क्यों डोले।
तेरा साहब है घट माहीं, बाहर नैना क्यों खोले।

जब उसको ज्ञान हो जाता है कि जिसको मैं ढूँढ़ता था, वह मेरी अपनी ही जात थी तो वह फिर बाहर आंखें क्यों खोलें ? वह अपने आप में मस्त रहता है।

कहें कबीर साहब सुने, मिलेंगे तिल ओलहे ,

कबीर साहब कहते हैं। साधूओ सुनो, वह मालिअ जो है। वो तिल यानी सहसदल कँवल के पीछे है। या दूसरे शब्दों में ये है कि बात कुछ भी नहीं थी, बात बिलकुल मामूली सी थी, वह हमको पता लग गई।

सतसंग आपको करा दिया, आपको नहीं कराया, मैं धर्म से कहता हूँ आपको नहीं कराया, रात को मैं आप दुखी था, मैं आप इस झमेले में पड़ा रहा, मन कहीं झूझता रहा। सोता था तो कई प्रकार के आदमियों की शकलें (चित्र) मेरे सामने आती थीं वो गन्दी

नहीं थी, मगर भिन्न भिन्न प्रकार के आदमी बच्चे, हालांकि जानता था कि यह माया है। मगर उसको छोड़ न सका। वह मे सामने से गये नहीं। घन्टा डेढ़ घन्टा इसी ख्याल में रहा, इस पश्चात जब मुझे असलीयत का पता लगा मैंने कहा कि यह तो माया का खेल है।

तो फिर मैं छोड़ के शब्द की तरफ चला गया, वहाँ फिर मुझे ये तकलीफ नहीं हुई, उस समय मेरे दिल में ख्याल आया कि यह हालत शायद सारे सतसंगियों पर गुजरती हो मेरे साथ ही नहीं। सबके साथ गुजरती हैं, उनको बता जाऊँ कि यह इससे बचने का रास्ता है। मैं ऐसे बचा, कुछ ये शब्द पढ़ के अपने आपको समझा लिया। मैं तो इस ख्याल से कि ये माया है काट देता हूँ और इसका असर मेरे दिमाग पर नहीं रहता। वरना कोई कहे कि ख्याल नहीं आते ये गलत है। सबसे बड़ी बात ये है कि अपनी कमाई हक हलाल की रखो और अपना भोजन शुद्ध रखो।

कोई कोई आदमी है, जिसको अभ्यास की इच्छा है। वरना दुनिया तो अपने अपने दुख के लिए आती है। मैं तो राम को मिलने निकला था, राम क्या मिला ? आप ही नहीं रहे। राम से क्या मिलना है।

॥ समाप्त ॥

संगत का प्रभाव

हुजूर परमदयाल परमसंत पं. फकीरचन्द जी महाराज

मानवता मन्दिर, होशियारपुर (पंजाब)

गुर की संगत से हटेंगे, कर्म माया काल सब ।
काट देगा तू सहज में, अपने ही भव जाल सब ।
मुख्य साधन संग सत का, और शेष है समझ गौन ।
इससे सूझेगी परम गति, सद्गति की चाल सब ।
जिसने पाया पाया सतसंग से, भक्ति ज्ञान गम ।
तू उतरेगा विवेक और, तरकना की खाल सब ।
कुछ दिनों संगत हो, कुछ दिन नाम कुछ दिन मुक्ति गति ।
इसके पीछे पद है पद का, सबकी रीति पाल सब ।
अर्थ धर्म और काम मुक्ति की है कुञ्जी सत का संग ।
राधास्वामी संग कर, दे काट अब जंजाल सब ।

राधास्वामी !

ये शब्द मैंने सुना । मैं नाक कटो मैं शामिल नहीं हुआ । अपनी आत्मा से पूछता हूँ । तू ने गुरु की संगत की क्या तू ने काल और माया के कर्म काट दिये ? गुरु की संगत कौन नहीं करता सभी लोग अपने अपने गुरुओं के पास जाते हैं । क्या उनके काल कर्म के बन्धन कट जाते हैं । एक तो होती है आस कि हमारा यह हो जावेगा । इसलिए हम गुरु के पास जाते हैं । मगर मैं अपने आप से सवाल यह करता हूँ कि उनके पास जाने से काल कर्म कट सकता है ? कि नहीं कट सकता । गुरु की संगत से कट सकता है । शर्त यह है कि जो कुछ गुरु तुमको कहता है, उस पर अमल करो तो, गुरु की संगत से लाभ जरूर होता है । ये मैं नहीं कहता कि नहीं होता, मगर वह जो लाभ बिना समझ के होता है । वह देर तक नहीं होता, यह एक बात, दूसरे गुरु गुरू होना चाहिये वह जरूरी है । जिसकी संगत की जाती है । वह परेक्टीकल हो, वह खुद अमल करता हो मैं भी अभी तक पूरा गुरु नहीं बन सका । १००

प्रतिशत पूर्ण नहीं हुआ। दो तीन प्रतिशत मुझमें भी गलतियां और कमी है इस वास्ते मैं किसी को नाम नहीं देता, झगड़ा ही समाप्त कर दिया। सिर पर बोझ नहीं होता। परसों मैंने व्यास जी से एक बात सुनी जर्मनी में कोई प्रोफेसर था वह बड़ा नेक था। उसके हाथ की दो उँगलियां किसी दुर्घटना में फिस गईं, डाक्टरों ने वो फिसी हुई उँगलियों की हड्डियां जोड़ से निकाल कर एक मुरदे की उँगलियों की हड्डियाँ उसके जोड़ों में फिट कर दीं कुछ देर इलाज के बाद वह राजी हो गया मगर उसमें आदत क्या पड़ी। कि जहां मौका मिलता वह प्रोफेसर किसी आदमी की जेब से कोई न कोई चीज चुरा लेता। और फिर दूसरे दिन उसी आदमी को वापिस कर देता कि मैंने तुम्हारी यह चीज चुराई है। मैं इसको गप भी मान लेता मगर मैं यह समझता हूं कि भारत वालों की अपेक्षा जो योरप वाले लोग होते हैं। ये चाहे डाका मारें, कुछ करें, मगर वह उसूल के पक्के व सच्चे हैं। यहां भारत में हर चीज में मिलावट है। मैं विलायत और अमरीका गया हूं। वहां कोई आदमी किसी चीज में मिलावट नहीं कर सकता। ये डबल रोटियां बनती हैं, एक सिख था वहां डबल रोटियां बनाने वाला, वो जब आटा गूँधता तो खोज करता उन्होंने उसको निकाल दिया। इस वास्ते बात को सच मानना पड़ता है। तो पहले तो लोगों ने समझा हँसी ठट्ठा करता होगा। मगर उसकी आदत पड़ गई। वे सब हैरान हुए, और वो आप भी हैरान होता था। वह कहता था मेरे बस की कोई बात नहीं, जब कोई चीज मेरे सामने आती है। तो मैं जेब से निकाल लेता हूं। फिर दे देता हूं। डाक्टरों तक बात पहुंची बजह क्या थी? वो जो दो उँगलियों की हड्डियां लगाई गई थी वह एक ठगकतरे की थी, गठकतरा जानते हो न। जो जेब से माल चुरा लेता वो गठकतरा मर गया था। उसकी उँगलियों से हड्डी निकाल कर डाक्टरों ने उस प्रोफेसर की उँगलियों में आग लगा दी थी। चूंकि वह हड्डियां गठ-कतरे की थी उनका संस्कार उस प्रोफेसर के मन पर पड़ता था। वो गाँठ काटने की कोशिश करता था। इसलिए संगत प्रभाव को मानना पड़ता है। मगर चूंकि उसके पहले संस्कार अच्छे थे। बो समझदार था। इसलिए

जिसकी चीज निकालता था। वो उसी को वापस कर देता था। अब तुम ही सोचो, तुम लोग हम गुरुओं की संगत करने से गुरु मत के अनुयाई होते हुए भी लोगों के जीवन नहीं बदलते। ये डोलते क्यों हैं। क्योंकि वह जिसकी संगत की जाती है। वह प्रेक्टीकल नहीं है।

गुरु की संगत से हटेंगे, कर्म माया काल सब।

अब जिस दिन से यह केस सुना है मेरी जान कांपती है। तुम लोग (पब्लिक) मेरे पास आती है। कोई मेरे पाओं को मत्था टेकता है, कोई टाँगों को दबाता है। कोई चीज खाने को ले आता है। जो आदमी आते हैं। अगर तो वह सच्चे हृदय से सच्चे प्रेमी हैं। निष्काम हैं। तो मुझे लाभ पहुंच सकता है। अगर वो ऐसे नहीं हैं तो मैं तो मर गया ? मेरा तो रहा ही कुछ नहीं, आप लोग अगर इस ख्याल से आए हैं कि मेरी बात को समझे और अपनी जिन्दगी को सुधारें तो मुझे कोई नुकसान नहीं, मगर दुनिया है, अच्छी बुरी प्रथक प्रथक प्रकृति वाले लोग औरत आते हैं। आकर मुझे माथा टेकते हैं। कोई जप्फी मारते हैं, तो क्या मुझ पर उनकी संगत और संस्कारों का असर न होगा। परसों से मैं डर गया मैं तो अब प्रार्थना यही करता हूँ। दाता मुझे ले चल अपने घर मैं तो अब यहाँ रहना नहीं चाहता। अब किस किस को मना करूँ ? कोई सुनता है मेरी बात को, कोई सुनता हो तो मुझे बता दो। इस वास्ते मैं आप लोगों में से किसी को प्रेम नहीं करता। केवल आपके प्रेम का जबाब प्रेम से देता हूं। तुम लोग आये हो तुम्हारे सवालों का जबाब जितनी शक्ति प्रेम तुम में होता है। उतना देता हूं। बाकी कोई गरज नहीं कभी तुम लोग स्वप्न में नहीं आये तुम कौन हो। क्यों, क्योंकि मेरा जातीय प्रेम किसी से नहीं। अपनी गरज नहीं रखता और जिससे रखता हूँ। उनके लिए मैं हित करने के लिए मजबूर हूं। मैं इसके लिए विवश हूँ। जहाँ किसी से लेकर खाया हुआ है। वहाँ मैं मजबूरन प्रेम करने को विवश हूं। मेरे बस की बात नहीं। क्योंकि उनका अन्न खाया हुआ होता है, उसका अन्न खाया हुआ होता है, उसका असर मेरे जिस्म में मौजूद रहता है। बहुत दिल रोकता हूं। मगर उच्च ज्ञान के लिये विवश हूं। क्योंकि उनकी संगत

मेरे साथ है। इस वास्ते हमको हुकम है कि अच्छी संगत करो। तो कि गुरु की संगत से माया जाल हटते हैं। जो गुरु अपने आप मन और देह से ऊँचा रहकर अपने निज स्वरूप में रहता हो उसकी संगत और उसके बचन सुनने से तुम्हारा कल्याण हो सकता है। वरना नहीं हो सकता जो गुरु अपनी जाती गरज के लिये काम करते हैं। वे दोषी हैं। क्योंकि उनकी संगत से आपको कोई लाभ नहीं पहुंचेगा। बल्कि आपका नुकसान हो जावेगा। मैं आगे भी समझता था, मगर इस बात से बिल्कुल पक्का हो गया। इसलिये जो आदमी अपने जीवन को अच्छा बनाना चाहते हैं। उनको चाहिये कि अपनी संगत वे अपना रहन सहन और सोहबत का ख्याल रखें। अच्छी संगत करें। यह है नियम जीवन गुजारने का आप हैरान होंगे हमारे शास्त्रों में यहाँ तक लिखा हुआ है कि जिस मिट्टी के बर्तन में शराब पड़ी हो. अगर वह बर्तन टूट जावे और उसका टुकड़ा पड़ा हो। जो आदमी उस टुकड़े को छुएगा वह भी पापी हो जायेगा। फिर और देखो, ब्राह्मण लोग होते थे जो अभ्यासी होते थे। वे आप अपनी रोटी पकाया करते थे। वो किसी विधवा के हाथ की रोटी नहीं खाते थे। हाँ अगर माँ विधवा है तो उसके हाथ की खा लेते थे। अभ्यास के समय मगर दूसरे के हाथ की नहीं। अब मैं सोचता हूँ कि हमारे मुनि कितने सयाने थे। उनमें दिमाग था। पिछले जमाने में स्त्रियों का यह नियम था कि कोई औरत सिवाय अपने पति के विस्तर के किसी चाचे ताए, देवर जेठ आदि के भी विस्तर पर नहीं सोती थी। और सोना भी पड़े तो अपना कपड़ा पहले ऊपर बिछा लेती थी। पुरुषों का भी यही हाल था मेरा भाई कट्टर सनातनी था। हालाँकि मेरे घर में विस्तरे सब कुछ थे मगर जब वह सोता था तो अपना कपड़ा नीचे बिछा लेता था। क्यों ऋषियों की शिक्षा का प्रभाव था। ऋषि समझते थे कि रेडिएशन काम करती है। कोई वस्तु ऐसी नहीं, जिन में से रेडिएशन बुखागत न निकलते हों हर वस्तु से निकलते हैं। और वह दूसरों पर असर करते हैं। जो आदमी जिस प्रकार का वह है। वह जो कपड़ा पहनेगा, जो पहनेगा उसमें उसका असर जावेगा वह चीज हो जाती है। रेडिएशन का कानून है। साइन्स है

जैसे आप है आप से निकलती है जैसा मैं हूँ, मुझ में से निकलती है। इससे बच कौन सकता है। हम लोग इस बात को समझते नहीं क्योंकि दिमाग नहीं चलता। खयाल नहीं आता मगर असल में बात यह ठीक है ब्राह्मण लोग आप रोटियां पकाते थे। कब्बे और बिल्ली के सामने नहीं खाते थे और जब खाते थे पहले बच्चों को देते थे। फिर गर्भवती औरत को देते थे फिर बूढ़ों को बांट कर खाते थे इसी को कहते हैं नजर न लग जावे, यानी दूसरों का ख्याल न जावे, वो देख कर जल न जाय। कई बार ऐसा होता है। समय बे समय कोई आ गया। औरतों को रोटी पकानी पड़ गई रोटी तो वो पकाएगी। मगर कुढ़ते हुए पकाएगी इस प्रकार वही जो रोटियां पकाएगी और खाने वाले को खिलाएगी। वो खाने वाले के लिए जहर है। वो बीमार हो जावेगा जरूर बीमार होगा बच नहीं सकता। औरत जो दिल में कुढ़ेगी नहीं, बल्कि खुशी से जो उसकी रोटियां पकाएगी वो कोई भली मानस ही होगी यह सब मनोविज्ञान है। अर्थात माया देश है माया देश में हमारा ख्याल और हमारा विचार काम करता है।

गुरु की संगत से हटेंगे कर्म माया काल सब।

मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ क्या यह ठीक है। हां ठीक है। कैसे ? जो पुरुष वास्तव में निर्बन्ध महा पुरुष हो उसकी संगत करो, इसके लिए पहले गुरु के पास रहो उसकी रहनी को देखो, उसके अन्तर के हाल को देखो, वो करता क्या है। उसके अन्तर का जीवन क्या है।

गुरु कीजे जान कर, और पानी पीजे छान कर।

गुरु जो क्रियात्मक होगा। वह तुमको समझावेगा कि माया क्या है। काल क्या है, वह क्या है, वो क्या है। फिर तुम काल और माया से बच जाओगे। मुझे दाता दयाल समझाते थे, मगर मैं तो

इतना मूढ़ था कि मुझे समझ नहीं आती थी। ये काम जो मुझे दिया ग केवल इस लिये दिया था, कि मुझे असलीयत और सच्चाई व शांति की समझ आ जावे। ये समझ मुझको आप लोगों की दया से आई। काल है हमारे मन का अज्ञानी होना। इस काल से मन को साफ रखने का नाम सतसंग है।

काट देगा तू सहज में, आप ही भव जाल सब।

अगर वह इस तरह संगत करेगा, गुरु के वचन को सुनेगा, समझेगा अमल करेगा तो आप ही अपने सारे मोह माया का जितना जंजाल है सब काट देगा जब मुझे समझ आ गई. तो कभी कोई ख्याल दिल में पैदा होता है। जो अनुचित है, नहीं होना चाहिये इस ख्याल से कि यह माया है। मैं काट देता हूं। मगर जो पिछले किये हुए हैं। उनका असर मुझे भोगना पड़ता है।

मुख्य साधन सतसंग का और शेष हैं गोन।
इससे सुझेगी परम गति सदगति की चाल सब॥

ऐसे गुरु की संगत से जिसने स्टेट या डेरा बनाने के लिए काम नहीं किया बल्कि आजाद है। किसी के बन्धन में नहीं है। अपने स्वरूप में रहता है। और किसी का आधीन नहीं। उसकी संगत और बचनों से ये होगा जो इस शब्द में लिखा है। अपने आप ही तुम उसकी बात को समझ करके अपने बन्धनों को काट दोगे बस इतनी ही बात है।

जिसने पाया पाया सतसंग से भक्ति ज्ञान गम,
तू उतारेगा विवेक और तरकना की खाल सब।
कुछ दिनों संगत हो कुछ दिन नाम कुछ दिन मुक्त गति.
इसके पीछे पद है सत का, सत की रीति पाल सब।

अच्छी संगत के लिए गुरु की आवश्यकता है। कुछ दिनों सतसंग करके बात को समझो कि हमको करना क्या है। जीना कैसे है। सतसंग में आने का मतलब यह है कि तुम्हारी जिन्दगी बन जावे, तुमने जीवत को कैसे बनाना है। उसके लिये नियम जान करके काम करो तब लाभ है। जब वह बात

समझ में आ गई तो उस जीने के लिए जो तरकीब और तदबीर है। उसका नाम है नाम। जो बातें गुरु ने बताई है। जिनसे तुम खुश रह सकते हो और वह तरकीब जो गुरु ने बताई है। जब तुम उस तरकीब पर चलोगे तुम इस दुनिया में फँसोगे नहीं उसका नाम है मुक्ति पद, ये तीन तो मैंने क्रियात्मिक रूप में देख लिए। अब मरने के बाद मेरे साथ क्या होगा। संत कहते है कि जात में भिन्न हो जाता है। या मिल जाता है। समझ भी थोड़ी सी मानती है। मगर मुझसे हर समय वहाँ रहा नहीं जाता। इस वास्ते में वह बात करता हूँ जिसको मैंने आजमाया है।

एक जन्म गुरु भक्ति करो दूसरे जन्म नाम।
तीसरे जन्म मुक्ति पद, चौथे में निज धाम ।।

ये जो तुम सतसंग में बैठे हो, शर्त यह है कि तुम सतसंग के लिए आये हो। (तमाशे के लिए नहीं) इसका नाम गुरु भक्ति और सतसंग है। सतसंग से जिन बातों का तुमको पत लगे। जिससे तुम्हारा मन और आत्मा शांत रहे जो तरकीब बताई जाती है। हर एक (प्रत्येक) आदमी के लिए प्रथक-प्रथक वह है नाम का जपना। जो ऐसा करेगा वह बेफिकर बे चिन्ता रहेगा। किसी से द्वेश नहीं किसी से द्वेश झगड़ा नहीं वह मुक्ति पद, चौथा पद जो आगे है। उसका मुझे थोड़ा बहुत अनुभव है। मगर मुझसे वहाँ रहा नहीं जाता, ये मुझे दुख है। और मैं कई बार सोचता हूं। शायद तुम्हारी बजह से मैं वहाँ नहीं रह सकता। तुम देखो ना सब लोग आते है। तुमको क्या कहूं। प्रातः मैं आता हूँ। तो रास्ते मैं लोग खड़े रहते हैं। लड़के लड़कियां आदमी घेरे रहते हैं कहां जाऊँ समझ मैं नहीं आता। पिछले जन्म का यह यश मिलना था, मिल गया मगर इसका इलाज मैंने एक ही सोचा है कि किसी से अपनी जाति संसारी गरज के लिए प्रेम न करूँ। बस, मगर जो सच्चे प्रेमी और भक्त हैं। चाहे वह गुरु हैं या नहीं। मगर उनमें सचाई है। उनकी संगत से गुरुओं को भी लाभ पहुंचता है। ये तुमको बताये देता हूं मैं, एक आदमी दिल का सच्चा है उसके अन्तर प्रेम है। वह गुरु या महात्मा

उसके साथ सच्चा प्रेम करता है। उसके विचार वह जो आदमी गुरु बना उसको ऊँचा ले जायेंगे। उसके ख्याल की ताकत गुरु पर असर करेगी इसलिये दाता दयाल मेरी बाबत कहा करते थे, ये फकीर मुझे तारने आया है। ऐसे सच्चे प्रेमी की सेवा अगर गुरु स्वीकार नहीं करता है, वह भी दोषी है इसलिए जहाँ सच्चा प्रेम मोहब्बत है। जो तुम्हारा हितैषी है। वहाँ मिलने जुलने में तुमको लाभ रहेगा और दूसरी जगह तुमको नुकसान पहुँचेगा। ये मैने आपको जो उदाहरण दी है। इससे यह सिद्ध हो गया कि प्रत्येक आदमी के जो विचार होते हैं। वह उसके देह में रहते हैं। जिस प्रकार उस गठकतरे की दो उँगलियां निकाल लीं, वह उन उँगलियों से ही गांठ काटता होगा न। उसका असर मरने के पश्चात भी उसकी उँगलियों में था। और जिस आदमी के वह हड्डियां लगी, उसमें भी वह आदत आ गई वो भी चीज चुराने लगा। इस वास्ते अपनी संगत को ठीक रखा करो। यद्यपि दुनिया में हमारा गुजारा मुश्किल (कठिन) है बात कहनी और है। प्रेक्टीकल अमली जीबन एक और है। हम बच नहीं सकते। उसमें नुकता केवल ये है कि अपनी जाती गरज न हो। इसके लिये मैंने अपना दृष्टिकोण प्रकट कर दिया। कि मैं अपनीं गरज नहीं रखता। और जिनसे रखता हूँ उनके लिये मैं हित करने को मजबूर हूँ। नरायण दास है। जब इसका कोई तकलीफ होती है। तो मैं लाख यत्न करूँ कि उसको भूल जाऊँ मगर नहीं भूल सकता। मास्टर मोहनलाल है। प्रेम करता है। अगर इसको कोई तकलीफ होती है तो मन उधर जाने को विवश है।

अर्थ धर्म और काम मुक्ति की है कुन्जी सत का संग।

अर्थ धर्म काम और मुक्ति ये किसी काबिल गुरू की सतसंगत से मिल जाता है। कैसे मिलता है? कोई तुम्हारी दुनिया की गरज है। तुम्हारी गरज अगर गलत है तो उसको दूर करने की कोशिश करेगा। या तुमको अपने वचनों द्वारा तरकीब बतायेगा। कि तुम अपने अर्थ को कैसे प्राप्त कर सकते हो। धर्म यानी तुमने क्या करना है तुमने मकसद जीवन का उद्देश्य ा है? और मुक्त दुनिया में प्रथक–प्रथक स्वभाव के लोग हैं। उनके लिए

अलग हुकम है। प्रत्येक आदमी के लिए एक ही उपाय नहीं है। जो ऊँचा फकीर होता है। वह प्रत्येक आदमी को एक ही आदेश नहीं देता। ये जो प्रत्येक आदमी को कहते हैं। सुमिरन, ध्यान, भजन करने को कहते हैं। ये मैं नहीं मानता मेरा छोटा भाई था राय-साहब सुरेन्द्रनाथ सातवीं जमात में पढ़ता था, मेरी देखा देखी दाता दयाल को पता चल गया और नाम ले आया, दाता ने नाम दे दिया और कहा तुमने नाम कों जपना है। न सुमिरन करना न ध्यान करना केवल प्रेम रखना। पिछली आयु में मेरी गोदी में आजाओगे और उसको कहा तेरे वास्ते आदेश है। जिन्दगी के मानी काम के मानी जिन्दगी। उसने गुरू की आज्ञा का पालन किया रेलवे का ट्रेफिक मैनेजर आफ रेलवे बन कर रिटायर हुआ, फिर वो इस तरफ आगया, आज कल तुम इन गुरुओं के पास जाओ, चाहे दस वर्ष का बच्चा हो नाम दे देगे, कहेंगे कानों में उँगली देकर बैठ जाओ ब्यास के सत संगियों का एक घराना अम्रतसर में है। उनका लड़का अमरजीत एम. ए. में पढ़ता था उसको दो दो तीन तीन घन्टे अभ्यास कराते थे। यहां आया रोने लगा पस कहने लगा नहीं मुझे क्या होगया। मैंने कहा अभ्यास मत किया कर छोड़ दे काम कर अब वह बड़ा लायक है। लाखों रुपथा कमाता है। अब वो इधर क्या कहता है बाधा सावनसिंहजी कई औरतों को जो अधिक अभ्यास करती थीं, कहा करते थे, काकों तू ना अभ्यास किया कर तेरा अभ्यास मैं कराऊँगा जो आदमियों को भी कह देते थे, अधिक अभ्यास अच्छा नहीं, सब के लिए एक कानून तो है नहीं, एक ही आदेश नहीं अलग अलग प्रकृती के लिये अलग अलग नाम हैं।

राधास्वामी संग कर, काट अब जंजाल सब

ये शब्द राधास्वामी शब्द नया गढ़ा गया है बात ये है कि जो तुम्हारा **Self** हो आप वह जहां से निकला हो उसका नाम है स्वामी और तुम जो हो उसका नाम है राधा कबीर साहब ने कहा है।

धारा उलट सुमरण करो, स्वामी संग मिलाय।

इस दुनियां का स्वामी तो है अकाल पुरुष, मगर उसका पहला रूप शब्द है। इस वास्ते सुरत शब्द योग जो भी करता है चाहे वो राधास्वामी नाम लेता है या नहीं लेता, इसका कोई सवाल नहीं, वह एक ही बात है, इन शब्दों के ख्याल में फँस कर मानव जाति आज बढ़ गई है और हमारी आपस में लड़ाई है। एक कहता है पांच नाम जपो, दूसरा कहता है वाहे गुरू, वाहे गुरू जपो, तीसरा कहता है राम राम जपो, चौथा कहता है अल्ला हू जपो, पाँचवाँ और कुछ कहता है कुछ कहो इन झगड़ों में पड़ कर हम बट गये।

इस समय इन परिस्थितियों में जनता को जिस ज्ञान की आवश्यकता है वो मैं देता हूँ इस वास्ते मैंने अपने आपको सन्त सतगुरु वक्त कहा है सतगुरु सच्चे ज्ञान का नाम है। जो अज्ञानरूपी अन्धेरे का नाश करता है। उसका नाम है सतगुरु. सच्चा ज्ञान क्या है ? जो कुछ तुम्हारे मन में फुरता है, ख्याल व संकल्प पैदा होता है। ये माया है। और जो इस दुनियां का आधार है, बनाने वाला है। जो उसका भेद नहीं जानते, उनका जीवन धीरग है। कभी मेरे मन में भी कोई ऐसा ख्याल पैदा होता है। ऐसी फुरना उठती है जिसको मैं नहीं चाहता मगर वो आजाता है, तो इस सच्चे ज्ञान से कि यह माया है, ख्याल है जो मेरे अन्दर आया हुआ है। मैं उसको काट देता हूँ। जब तक ये ज्ञान न हो कि यह संकल्प माया है। वह कर्म बन जाता है।

जब तुम्हारा मन है। इसके अन्तर में तरह तरह के बिचार निकलते रहते हैं। और इन विचारों में हम दुखी सुखी होते रहते हैं जब तक सतगुरु यानी सच्चा ज्ञान न मिले। धर्मराज कौन है ? क्या कोई आदमी है धर्मराज ? वह तुम्हारा मन ही धर्मराज है। और तुम्हारा मन ही यमराज है। जो जो तुमने कुछ किए हुए हैं। जब मर जाओगे जैसे स्वप्न में हम बहुत कुछ देखते हैं। ऐसे फिरते

रहोगे। जब वह स्वप्त समाप्त हो जायेगा, मरने के बाद फिर अपनी वासना के अनुसार फिर तुम जन्म लोगे। यह सुमिरन ब्यान मन पर काबू करने के लिये है। जो ये नहीं कर सकते, वो काल और माया से निकल कर ऊपर नहीं जा सकते, इनका मन इनको नीचे गिरायेगा। और जो आदमी मन के चक्कर से ऊपर नही जावेगा। वह किसी सूरत में भी यह उम्मीद न रखे कि उसका आवागवन चला जावेगा।

आप दुनियादार हैं! इस वास्ते अपने ख्याल को ठीक रखो, एक जगह विश्वास रखा रखो। जहां भी तुम्हारी मरजी है। मगर जिस पर विश्वास रखते हो, उसको पूर्ण मानो, तुम्हारा काम बन जावेगा। अपने अन्तर मांगा करो देने वाला तुम्हारे अन्तर रहता है। मालिक या गुरु के रूप को समझ कर अपने आपको उसके अर्पण करते रहा करो। नीयत को साफ रखो मालिक की याद रखो। बाहर के गुरु की यह ड्यूटी है कि वह जीव को यह यकीन करादे कि असलियत और सचाई क्या है। और निश्चयात्मिक बनाकर समझ देकर बाहरमुखो से अन्तरमुखी बना दे।

मन ही गुरु है, मन ही चेला है। मगर इसकी समझ बिना जिन्दा गुरु के आती नहीं। मन को छोड़ कर मन से परे अपने रूप में चले जाना नाम है। नाम वह अवस्था है जहां इन्सान मन को और जिस्म को भूलकर ऊपर चला जाता है वहां जो शब्द होता है वो नाम है। क्योंकि मन अकेला ठहरता नहीं इसलिए बाहर सहारा ले लो वरना जिसको तुम प्यार करते हो तुम्हारे पास है। सच पूछो तो तुम्हारी अपनी जात है। बात को समझ कर अपनी जात को ताक में रख कर दुनिया में बरतो, दुनिया के काम बिना तो गुजारा नहीं। अपनी ड्यूटी को पूरा करो दुनियाँ में इतने मुब्तला न हो जाओ कि बुरी तरह फँस ही जाओ पूरा गुरु है पूरा ज्ञान पूरा अनुभव। बाहर का गुरु मालिक का पता देता है और चलने का रास्ता बताता है।

जाम तमाची और नूरी

किसी समय में जाम तमाची नामी सोम वंश का क्षत्री राजा सारे सिन्ध पर राज करता था। एक दिन वह नाव पर बैठा हुआ कंभर झील पर आया। उसके किनारे मुहाना जाति के मांझी डेरा डाल कर रहते थे। यह प्रतिदिन मछलियां पकड़ते और बाजार में ले जाकर बेच दिया करते थे। यही उनका पुराना उद्यम था। मैले कुचैले इतने थे कि घृणा होती थी। इनकी स्त्रियां साधारणरूप से कुरूप और मैली थीं। तरह तरह के शारीरिक रोग इनको लगे रहते थे। किसी किसी की तो यह दशा थी कि युवा अवस्था में ही बूढ़ी हो जाती थीं। जिस ओर से जाती थी उनकी दुर्गन्ध से लोगों का दिमाग भर जाता था। कपड़े लत्ते बर्तन भांडे अर्थात उनकी हर एक चीज से मछली की दुर्गन्ध आया करती थी। यदि गलती से कोई व्यक्ति उनकी किसी वस्तु को हाथ लगा देता था तो सड़ी हुई मछली की दुर्गन्ध कुछ इस तरह इसकी नाक में समा जाती थी कि दिन भर चैन नहीं मिलता था। उनके डेरों के चारों ओर मीलों तक सड़ायध फैली रहती थी। मुहाने लड़के लड़कियां भी ऐसे ही थे—गदे, मलीन और कुरूप! ईश्वर जाने वह किस के लोग थे जिनके अन्दर सफाई नाम मात्र को भी नहीं थी। लोग कहा करते थे—मोहाने मनुष्य नहीं किन्तु पशु हैं। इसका कारण यह था कि वह रात दिन पानी में रहते थे। तैरने में तो यह कमाल था कि ऊदबिलाव तक उनका मुकाबला नहीं कर सकत था, यद्यपि वह पानी का पशु कहा जाता है और नदी किनारे रहता है। यह पशु तक उन लोगों से अच्छे थे, क्योंकि स्वाभाविक ही मैले नहीं थे।

लेकिन इनमें एक मुहाना लड़की नूरी नाम की बड़ी सुन्दर और स्वच्छता प्रिय पैदा हो गई थी। वह मुहाना जाति के तालाब की कमल थी। सुन्दर, अच्छा रंग ढंग! प्रसन्नचित्त! जितने यह लोग मैले रहते थे, वह उतनी ही स्वच्छ रहती थी। उसके दोनों नेत्र दीपक की तरह दीप्त थे। रूप की

निर्मलता रंगीन गुलाब के फूल के समान थी। विश्वभर में उस जैसी लड़की एक भी नहीं थी। उसके शरीर से न दुर्गन्ध आती थी न उसके वस्त्र मैले रहते थे। वह राज महल की राजकुमारियों की तरह साफ सुथरी रहती थी। साथ ही अत्यन्त सीधी सादी और शर्मीली थी।

जिस समय जामतमाची अपनी नाव पर उधर से गुजरा, नूरी झील के किनारे खड़ी थी। राजा ने उसे देखा और देखते ही नूरी के रूप का प्रभाव उसके हृदय में चुभ गया। और मांझी की लड़की की आंखों ने चुम्बक बन कर राजा के दिल रूपी लोहे को अपनी ओर खेंच लिया और उसे अपना दिल दे बैठा। वह अपने आपे से जाता रहा।

इश्क या प्रेम संसार में बुरी बला है। यह जिस पर चढ़ जाता है फिर अपना ही बना लेता है। राजा बुद्धिमान था। देर नहीं की। नूरी के मां बाप को बुला भेजा और नूरी के साथ विवाह करने की इच्छा प्रकट की। मांझी प्रसन्न हुए। उनकी प्रसन्नता की कोई सीमा न रही। सिंध का राजा मुहाना लड़की से विवाह करे, इससे अधिक सौभाग्य की बात क्या हो सकती थी। सब मांझी दिल से खुश हुये। राजा ने उनकी जाति का मान बढ़ाया।

जाम तमाची ने अपना खजाना खोल दिया। हीरे, जवाहरात, सोना, चांदी आदि अधिकता के साथ मांझियों में बांट दिया कि वह मालामाल हो गये। इसके बाद उसने नूरी को साथ लिया। महल में आया। विवाह किया और अपनी रानी बना ली। नूरी होने को तो रानी हो गई। राजा भी उसे बड़ा प्रेम और आदर करता था लेकिन उसकी सादगी, शर्मीलेपन में अन्तर नहीं आया। यदि कोई चापलूसी से उसकी प्रशंसा करता तो वह उत्तर देती थी—"मैं क्या हूं? केवल एक निर्धन मांझी की लड़की हूं। राजा के साथ मेरी क्या तुलना है। मैं उसकी रानी होने के कब योग्य हूं। यह

उसकी महानता है कि मुझे नीचे से उठा कर ऊँचे पर पहुंचा दिया।" राजा स्वयं उसकी प्रशंसा करता तो कहती कि "मुझमें अवगुण भरे है। आपकी रानियों के मुकाबले में मैं कोई चीज नहीं हूँ। वे मुझ से हजारों गुना सुन्दर हैं। फिर भी मैं जितना तुझे प्रेम करती हूँ उनमें से कोई भी प्रेम नहीं करती।"

एक दिन जाम तमाची की इच्छा हुई कि नूरीं की और रानियों के साथ परीक्षा की जाय। उसने अपनी कुल रानियों को कहला भेजा। "मैं आज सैर को जा रहा हूं। तुममें से जो पहिनावा जिसे अधिक सुन्दर और फबता मालूम हो पहिन कर आओ। इस समय जो रानी उस समय सबसे अधिक सुन्दर दिखाई पड़ेगी उसी को अपने साथ सैर में ले जाऊँगा।" सोमवंशी रानियों ने अपने आपको सँवारा और रूप के गर्व में मस्त होकर उस जगह आई जो उनके उपस्थिति के लिये नियत थी, किन्तु नूरी की दशा इनके प्रतिकूल थी। उसने मांझी लड़की के साधारण वस्त्रों को अधिक अच्छा समझा और उसी तरह की सादी सस्ती लेकिन साफ साड़ी पहन कर आई, जो रानी होने से पहिले पहिना करती थी, जिसे देख कर राजा अपना दिल दे बैठा था। उसके शरीर पर न हीरे जवाहिरात थे न गर्दन में जंजीर और हार, न उँगलियों में अँगूठियाँ। लज्जा के साथ वह अपने रथ से नीचे उतरी। उसका हृदय प्रेम के भाव से भरा हुआ था। आँखें प्रेम की ज्योति से चमकती हुई राजा की शकल की ओर आकर्षित थीं। दूसरी रानियों ने उसका रंग ढंग देखा। घृणा की। आखिर वह माँझी ही की तो लड़की थी। उनकी दृष्टि में उसे जेवर और पोशाक पहिनने की योग्यता कब आ सकती थी। वे पहिले ही से गर्वीली थीं। अब उन्हें और भी अधिक गर्व हो गया। सोच--"कब सम्भव है कि जाम तमाची उनकी अपेक्षा में नूरी को मान्यता देगा।" लेकिन जब राजा की दृष्टि नूरी पर पड़ी, उसने देखा कि नूरी की आँखें प्रेम के प्रकाश से विशेषरूप से चमक रही थीं। वही साधारण वस्त्र उसके तन पर पड़ा था। जो विवाह से पहले उसने पहिन

रक्खा था जिसे देखकर वह मोहित हो गया था। उसने सोमवंशी रानियों की ओर देखा तक नहीं। हाथ उठाये हुये सीधा उसके पास आया। उसे सैर में अपने साथ लिया। सैर के बाद साथ लिये हुए उसके महल में आया। दूसरी रानियों के क्रोध की दशा कुछ न पूछो। वह रोती हुई अपने अपने महलों को वापिस गई। जाम तमाची ने उनके क्रोध की तनिक भी परवाह नहीं की। नूरी को अपनी पटरानी बनाया। जंभर का कुल क्षेत्र उसके रिश्तेदारों को बतौर जागीर के दे दिया।

—०—

गजल

आशिक और माशूक मिले, और इश्क का यह अंजाम हुआ।
जिसको सब बेकार समझते थे, उसका यह काम हुआ।।
इश्क की मंजिल कड़ी है भाई, बुजदिल का यहां काम नहीं।
जिसका दिल हो शेरे सिफत, बस उसी का इश्क में नाम हुआ।।
आशिक के दिल में यकसूई, और यकदिली रहती है।
चंचल चित्त क्या इश्क करेगा, इश्क उससे बदनाम हुआ।।
मौत का खौफ दूर हो दिल से, जीने की कुछ आस न हो।
उसकी किस्मत में नसीब में, इश्क का मीठा जाम हुआ।।
पीया पियाला इश्क का जिसने, मस्त हुआ मदहोश हुआ।
मजहब मिल्लत के सौदा में, पड़ा जो वह नाकाम हुआ।।
हरी को भजा हरी के हो गये, जीते जी हरि हरि कीया।
मरे तो मौत के पीछे अपना, मसकन हरि का ध्यान हुआ।।
भक्त से अपने जुदा हरि नहीं, भक्त हरी दोनों यकसां।
सीता सती है और माशूक, उसी का राम हुआ।।

—०—

पिंगल साखी से—

तीर्थ का अंग

'मनो वाक्काय शुद्धानाम्, राजन् तीर्थ पदे पदे।
तथा मलिन चित्तानाम्, गंगापि कैकटाधिका ॥

अर्थ—जिनकी मन बानी और देह शुद्ध है। ऐ राजन्! उनके पग पग में तीर्थ निवास है। जो मलिन चित्त हैं उनके लिए गंगा भी कैकट देश के समान है।

—०—

जिनकी बानी शुद्ध है, जिनके निर्मल बैन।
पिंगल पग पग तीर्थ है, उसे सदा सुख चैन ॥१॥
सत्संगत तीर्थ महा, तीर्थ राज प्रयाग।
पिंगल परे का यज्ञ वहाँ, नहाय चरन गुरु लाग ॥२॥
गंग भक्ति जमुना करम, सरस्वती रूप का ज्ञान।
पिंगल तीनों का वहाँ, संगम सत्त प्रमान ॥३॥
जो नहाय इस तीर्थ में, फल पावे तत्काल।
पिंगल बदले दशा नित, जो गुरु होहिं दयाल ॥४॥
और तीर्थ सब अधम हैं, मत कर इनका ध्यान।
पिंगल सतसंग तीर्थ से, जीते जी कल्यान ॥५॥

—०—

संग का अंग

महानुभावो संसर्गः कस्यनोन्नति कारकः।
पद्म पत्रस्थितं वारिधत्ते मुक्ताफल श्रियम् ॥

अर्थ—महापुरुषों के संग से वैसी ही भलाई होती है जैसे कमल के पत्र पर ठहरा हुआ पानी का बिन्दु भी मोती के समान शोभायमान होता है।

—०—

संगत कीजे साधु की, सहित स्वभाव सनेह।
पिंगल साधु के संग से, पावे उत्तम देह ॥१॥

संगत कीजे साधु की, मोह मान को त्याग ।
पिंगल साधु के संग से, बढ़े तुम्हारा भाग ।।२।।

संगत कीजे साधु की, तजकर मद अभिमान ।
पिंगल साधु के संग से, प्राप्त होय सतज्ञान ।।३।।

संगत कीजे साधु की, सहित विवेक विचार ।
पिंगल साधु के संग में, जीवन का उपकार ।।४।।

मैली नदी का नीर ज्यों, पड़ा गंग में आय ।
पिंगल गंगा संग से, वह गंगा कहलाय ।।५।।

संगत कीजे साधु की, बनत बनत बन जाय ।
पिंगल काठ के संग में लोहा भी तर जाय ।।६।।

कमल पत्र स्थित भया, जब वर्षा का जल ।
मोती सम झलके सदा, कहे दास पिंगल ।।७।।

अबला सबल का संग कर, सहजे बने सबल ।
त्याग कुसंग सुसंग कर, कहे दास पिंगल ।।८।।

संगत के परताप से, नीच भलो बन जाय ।
पिंगल मिसरी बाँस ज्यों, एक ही मोल बिकाय ।।९।।

पिंगल चन्दन संग जब, उगे जो नीम बबूल ।
संगत के परताप से, दें सुगन्धि ज्यों फूल ।।१०।।

पिंगल की इच्छा यही, मिलै साधु का संग ।
कीट भृंग के संग से, बने सहज में भृंग ।।११।।

—०—

"मनुष्य बनो" (हिन्दी मासिक पत्र) समाचार पत्र (केन्द्रीय) अधिनियम १९५६ नियम ८ फार्म ४ के अनुसार आपेक्षित आवश्यक सूचना

१—प्रकाशन का स्थान	:	अलीगढ़
२—प्रकाशन अवधि	:	मासिक
३—मुद्रक का नाम	:	श्रीमती सुधा मीतल
४—राष्ट्रीयता	:	भारतीय
५—पता	:	शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़। उत्तर प्रदेश
४—प्रकाशक का नाम	:	श्रीमती सुधा मीतल
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	शिव भवन, लेखरा[illegible] अलीगढ़
५—सम्पादक का नाम		श्री श्रीमती सुधा
राष्ट्रीयता		भारतीय
पता	:	शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़
६—स्वत्वाधिकारी	:	श्रीमती सुधा मीतल
[illegible]मक	:	परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज

७—सुधा मीतल घोषित करती हूं कि उपर्युक्त विवरण मेरी जानकारी और विवरण के अनुसार सही है।

दिनांक १५ अक्टूबर, १९७८

सुधा मीतल
प्रकाशक के हस्ताक्षर

Regd. No. L-ALG-28

पुस्तकें

हमारे यहां
महर्षि शिवव्रतलाल जी महाराज
कृत
हिन्दी की आध्यात्मिक, धार्मिक,
स्त्री उपयोगी,
स्वास्थ्य व मनोविज्ञान सम्बन्धी
पुस्तकें तथा 'शाही' और 'मोती'
सिलसिले के उपन्यास तथा
परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज
कृत उच्च कोटि की अमूल्य पुस्तकें
मिलती हैं।
पूरा सूचीपत्र मंगायें।
डाक खर्च सब का अलग है।
पुस्तकें रजिस्टर्ड डाक या रेल से
भेजी जाती हैं।

मिलने का पता :—
कार्यालय
मनुष्य बनो
शिव भवन, लेखराजनगर,
अलीगढ़ (उ० प्र०)

सम्पादक— श्रीमती सुधा मीतल
व्यवस्थापक व प्रकाशक— श्रीमती सुधा मीतल, शिव भवन, लेखराज नगर अलीगढ़।

ग्राहक सं.

Printed by S. Mittal, Data Dayal Printers, Aligarh

26

2/82

3/82

4/82

5/82

6/82

8/82

9/82